सभोपदेशक

1 यरूशलेम के राजा, दाऊद के बेटे और
शिक्षक की शिक्षा। 2 शिक्षक का कहना
यह है कि सब कुछ बेकार ही बेकार है -
बेकार ही बेकार 3 इस दुनिया में इन्सान द्वारा
की गयी मेहनत से क्या फ़ायदा? 4 एक पीढ़ी
के बाद दूसरी पीढ़ी आती है लेकिन पृथ्वी
ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। 5 सूरज निकलता
है और डूब जाता है और अपने निकलने
की दिशा की ओर तेजी से चला जाता है।
6 हवा दक्षिण की तरफ़ बहती है और उत्तर
की ओर घूम जाती है। हवा घूमती और बहती
रहती है और अपनी परिधि में लौट आती
है। 7 सारी नदियाँ समुन्दर में जा मिलती है,
फिर भी समुन्दर कभी मरता नहीं है। जिस
जगह से नदियाँ निकलती है, उधर ही को
वे फिर चली जाती हैं। 8 सब बातें मेहनत
से भरी हैं। इसका बखान इन्सान नहीं कर
सकता। देखते-देखते आँखें तृप्त नहीं होती हैं,
न ही कान सुनते-सुनते थकते हैं। 9 जो कुछ
हुआ था, वही फिर से होगा। जो कुछ बन
चुका है, वही फिर से बनाया जाएगा। इस
दुनिया में कुछ भी नया नहीं हैं। 10 क्या ऐसा
कुछ है, जिस के बारे में लोग कह सकें कि
यह नया है? पुराने समयों से ऐसा होता आ
रहा है। 11 न तो पुरानी बातों की याद बनी
रहती है, न भविष्य में होने वाली बातों को
लोग याद रखते हैं। 12 मैं उपदेशक यरूशलेम
में इस्राएल का राजा था 13 इस संसार में
जो कुछ किया जाता है उस का भेद बुद्धि
से सोच-सोच कर मालूम करने के लिए मैंने
मन लगाया। प्रभु ने मनुष्य को जिस काम
में लगे रहने के लिए ठहराया है, वह बड़े
दुःख का हैं। 14 इस जगत में किए जाने वाले
सभी कामों को मैंने देख लिया है। देखो, वे
सभी बेकार और हवा को पकड़ने की तरह
है। 15 टेढ़े को सीधा नहीं किया जा सकता
है और जो है ही नहीं, उसे कैसे गिना जा
सकेगा? 16 मन ही मन मैंने कहा, “देखो,
यरूशलेम में जो लोग[a] मुझ से पहले थे, उन
सभी की तुलना में मेरे पास अधिक बुद्धि है।
मुझे बहुत बुद्धि और ज्ञान हासिल हो चुका
है। 17 मन लगा कर मैंने जानना चाहा था कि
बुद्धि के रहस्य को जान सकूँ और पागलपन
तथा मूर्खता भी। लेकिन मैं इस नतीजे पर
पहुँचा हूँ कि यह भी हवा को पकड़ना है।
18 ढेर सी बुद्धि पा लेने से दुख भी बढ़ जाता
है, जो व्यक्ति अपना ज्ञान बढ़ाता है, उस का
दुःख भी बढ़ जाता है।

2 मैंने अपने मन से कहा, “चलो मैं तुम
को खुशी के द्वारा जाँचूंगा, इसलिए खुश
और आनन्दित हो।” लेकिन देखो, यह भी
बेकार रहा। 2 मैंने हँसी के बारे में कहा, “यह
तो पागलपन है” और मज़ा करने के बारे में,
कि इस से क्या हासिल होता है?” 3 मन में
मैंने सोचा, कि मेरी बुद्धि[b] किस तरह बनी
रहे और मैं मन को दाखमधु पीने से किस
तरह बहलाऊँ और बेवकूफ़ी को किस तरह
से थामें रहूँ। ऐसा तब तक करूँ जब तक
यह पता न चल जाए कि इन्सान कौन से
अच्छे काम को अपने जीवन भर करता रहे।
4 मैंने बड़े कामों[c] की शुरूवात की। अपने
लिए मैंने विशाल घर बनाए। अंगूर के बगीचे
खुद के लिए लगाए। 5 अपने लिए ही मैंने

[a] 1.16 राजा [b] 2.3 अक्ल [c] 2.4 प्रक्रम

बाग-बगीचे और तमाम तरह के फल के पेड़
लगवाए। 6 अपने लिए मैंने तालाब खुदवाए
ताकि उन से जंगल पेड़ पौधों को पानी मिल
सके। 7 मैंने दास-दासियाँ रख लीं और उन से
बच्चे उत्पन्न हुए। मेरे पास एक बड़ी संख्या में
छोटे-बड़े पशु थे। इतनी संख्या में मवेशी मेरे
से पहले यरूशलेम में किसी के पास नहीं थे।
8 अपने लिए मैंने चाँदी सोना और राजाओं की
धन-दौलत इकट्ठा कर ली थी। मन को प्रसन्न
कर देने वाली चीजें जैसे गायक-गायिकाएँ
और वादक यंत्रों को मैंने अपने लिए इकट्ठा
कर लिया था। 9 इस तरह से यरूशलेम में
मुझ से पहले हुए किसी भी राजा से अधिक
मैं दौलतमन्द हो चुका था। लेकिन मेरी बुद्धि
अपने ठिकाने रही। 10 जो कुछ देखने की मेरी
इच्छा हुयी, मैंने देखा। मैंने किसी भी तरह के
आनन्द को भोगने में कसर नहीं रखी। सारी
मेहनत के कारण मेरा मन सन्तुष्ट हुआ और
यह मेरी मेहनत के बदले में मुझे मिला। 11 तब
मैंने एक बार फिर अपने हाथों के कामों और
मेहनत पर दृष्टि की। मुझे समझ में आया कि
सब कुछ बेकार और हवा को पकड़ना है
और दुनिया में कोई फ़ायदा नहीं। 12 फिर
मैंने चाहा कि बुद्धि, पागलपन और बेवकूफ़ी
के कामों को देखूँ, इसलिए कि जो व्यक्ति
राजा के बाद आता है, वह क्या कर सकता
है, वही जो पहले से होता रहा है। 13 फिर
मैंने देखा कि जिस तरह से रोशनी अन्धेरे
से बेहतर है, बुद्धि भी बेवकूफ़ी से बेहतर
है। 14 बुद्धिमान[a] के सिर में आँखें रहती हैं,
लेकिन मूर्ख अन्धेरे में टटोलते हैं। फिर भी
मैं जान चुका हूँ कि दोनों ही की हालत एक
सी होती है। 15 मैंने मन ही मन कहा, "जैसी
हालत बेवकूफ़ की होती है, वैसी मेरी भी
होगी, फिर मेरे बुद्धिमान होने से क्या फ़ायदा
हुआ?" 16 न ही अक्लमंद को और न ही
बेवकूफ़ को लोग हमेशा याद करेंगे। भविष्य
में सब कुछ भुला दिया जाएगा। बुद्धिमान
की मौत कैसी होती है? बिल्कुल मूर्ख की
तरह। 17 इसलिए मैंने अपने जीवन से नफ़रत
की, क्योंकि दुनिया में किया जाने वाला काम
दुखित करता है। सब कुछ बेकार और हवा
को पकड़ने की तरह है। 18 हाँ, पृथ्वी पर
रहते हुए मैंने जो मेहनत की उसके परिणाम[b]
से मैंने नफ़रत की, क्योंकि यह तो होगा ही,
कि मेरी जगह पर आने वाला व्यक्ति उस
का लाभ उठाएगा। 19 यह बात भी किसी को
मालूम नहीं कि वह मनुष्य बुद्धिमान होगा या
मूर्ख। फिर भी दुनिया में जितनी मेहनत मैंने
की और उसके लिए बुद्धि उपयोग की, सभी
का अधिकारी वही होगा। यह भी बेकार
ही है। 20 मैं तब पृथ्वी पर अपने किए गए
परिश्रम के बारे में निराश हुआ 21 क्योंकि ऐसे
लोग भी हैं, जो मेहनत बुद्धि और ज्ञान से
अपने काम को करके सफ़लता हासिल करते
हैं, फिर भी वे ऐसे लोगों के लिए छोड़ जाते
हैं, जिन्होंने उस सफ़लता में कोई योगदान
नहीं दिया होता है। यह भी एक बेकार और
गलत बात है। 22 मनुषय इस दुनिया में मन
लगाकर मेहनत करता है, उस से उसको क्या
फ़ायदा होता है? 23 सकी सारी ज़िन्दगी त
दुख से भरी रहती है. कष्ट के साथ उसके
सारे काम होते हैं। रात में भी वह चैन महसूस
नहीं करता है। यह भी बेकार है। 24 इन्सान
के लिए खाना खाने और मेहनत करते हुए
सुख से रहने के अलावा कुछ भी अच्छा
नहीं है, 25 क्योंकि खाने पीने और सुख का
आनन्द उठाने में मुझ से ज़्यादा कौन आगे
बढ़ पाया है? 26 जो मनुष्य परमात्मा की
निगाह में अच्छा है उसे वह बुद्धि समझ और

[a] **2.14** अक्लमन्द [b] **2.18** फल

खुशी देते हैं, परन्तु जो सच्ची राह से भटक
चुका है,उसे दुख भरा जीवन ही मिलता है,
ताकि वह इकट्ठा करे और जो व्यक्ति परमेश्वर
को प्रसन्न करता है, उसे दे दे। यह भी हवा
को पकड़ने के समान है और बेकार है।

3 इस दुनिया में हर एक बात का और हर
लक्ष्य का एक समय होता है। 2 उत्पन्न
होने का समय और मृत्यु का समय बोने का
समय और बोए हुए को उखाड़ने का समय
3 मार डालने का समय और स्वस्थ करने का
समय। तोड़ देने का और बनाने का समय
भी होता है। 4 रोने की परिस्थिति और हँसने
की परिस्थिति, विलाप करने का वक्त और
नाचने का वक्त। 5 पत्थर फेंकने का समय
और पत्थर बटोरने का समय होता है। गले
लगाने का समय और गले न लगाने का भी
समय है। 6 ढूँढने का समय और खो देने का
भी समय भी है। बचा-कर रखने और फेंक
देने का भी समय है। 7 फाड़ने का समय और
सीने का समय, चुप रहने का समय और
बोलने का समय भी है। 8 प्यार करने का
समय और दुश्मनी करने का समय, लड़ाई
का समय और मेल का समय भी होता हैं।
9 मेहनत करने वाले को अपनी मेहनत से
क्या मिलता है? 10 प्रभु ने इन्सान के लिए जो
मेहनत करना ठहराया है, उसे मैं देख चुका
हूँ। 11 प्रभु ने सब कुछ सुंदर रचा है। साथ ही
इन्सान के मन में न समाप्त होने वाला ज्ञान
भी डाल रखा है। इसके बावजूद शुरूवात से
आखिर तक प्रभु के द्वारा किए गए काम को
इन्सान समझ नहीं सकता। 12 मैं जान गया
हूँ, कि मनुष्यों के लिए खुश रहने और जीवन
भर भलाई करने के अलावा और कुछ भी
अच्छा नहीं है। 13 इन्सान की भूख मिटाया
जाना और अपनी मेहनत में सन्तुष्ट रहना
प्रभु की तरफ़ से ईनाम है। 14 प्रभु का किया
हुआ हमेशा ठहरता है। उसमें कुछ बढ़ाना या
घटाना असंभव है। प्रभु ऐसा इसलिए करते
हैं, ताकि लोग उन से डरें। 15 जो कुछ हो
रहा है, वह इस से पहले हो चुका है। जो
भविष्य में होने वाला है, वह भी हो चुका
है। 16 मैंने इस संसार में यह भी देखा कि
इन्साफ़[a] की जगह पर अन्याय[b] है और जहाँ
ईमानदारी, खरापन होना चाहिए, वहीं दुष्टता
है। 17 मन ही मन मैं बोला, “प्रभु दोनों ही को
तौलेंगे, “क्योंकि उनके यहाँ हर एक काम
और हर एक विषय का समय है। 18 मैंने मन
ही में सोचा[c], “ऐसा इसलिए होता है ताकि
प्रभु मनुष्य को परखें कि वे सभी जानवरों
की तरह हैं।” 19 इन्सान और जानवर दोनों
ही की हालत एक ही सी होती है। दोनों ही
मरते हैं। सभी की सांस चलती है। इन्सान
जानवर से बढ़ कर नहीं है। सब कुछ बेकार
है। 20 सभी मिट्टी से बने हैं और सभी वापस
मिट्टी में मिल जाते हैं। 21 इसका ज्ञान किस
को है कि मनुष्यों का प्राण[d] ऊपर और पशुओं
का प्राण[e] नीचे जाता है? 22 इसलिए मैंने यह
देखा कि इस से बढ़ कर कुछ नहीं कि लोग
अपने कामों में आनन्दित रहें, क्योंकि यही
उनका हिस्सा है। उसके जाने के बाद कौन
उसे वापस लाएगा ताकि वह देखे कि क्या
कुछ हो रहा है।

4 मैंने जगत में होने वाले अंधेर पर गौर
किया। अंधेर सहने वालों के बहते
आँसुओं को मैं देख सका। उन्हें शांति देने
वाला कोई नहीं था। 2 इसलिए मैंने जीवित
लोगों से ज़्यादा उनकी बड़ाई की जो मर चुके
थे। 3 सच्चाई यह है वह तो और भी ज़्यादा
मज़े में है, जो अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुआ,

[a] **3.16** न्याय [b] **3.16** बुराई [c] **3.18** कहा [d] **3.21** आत्मा [e] **3.21** आत्मा

क्योंकि वह संसार में होने वाले बुरे कामों
को नहीं देखेगा। 4 तब मैंने मेहनत से किए
गए सारे कामों और सफल कामों पर ध्यान
दिया, जिन्हें लोग दूसरों[a] के प्रति जलन के
कारण करते हैं। यह भी बेकार और मन का
कुढ़ना है। 5 मूर्ख हाथ पर हाथ रखता है और
अपना ही मांस खाता है। 6 चैन के साथ एक
मुट्ठी उन दो मुट्ठियों से बेहतर है, जिन के साथ
परिश्रम और मन का कुढ़ना हो। 7 फिर मैंने
धरती पर एक और व्यर्थ बात देखी। 8 किसी
के बेटा भाई या और कोई नहीं है और वह
अकेला रहता है। फिर भी वह मेहनत करने में
लगा रहता है, उसकी आँखें दौलत से संतुष्ट
नहीं होती है। वह यह भी नहीं कहता, कि वह
किस के लिए परिश्रम कर रहा है या किस
के लिए अच्छी वस्तुओं से अपने आपको
वंचित रख रहा है। यह भी बेकार और नीरस
दुःख भरा काम है। 9 एक से बढ़ कर दो
हैं, क्योंकि उनकी मेहनत का फल अच्छा
होता है। 10 उनमें से एक के असफल, होने
पर दूसरा उसे सहारा देगा। अफ़सोस उस
पर जो अकेला होकर गिरे और उसे उठाने
वाला कोई न हो। 11 यदि दो जन एक साथ
सोएँ, वे गर्म रहेंगे, लेकिन अकेले कोई गर्म
कैसे होगा? 12 एक अकेले व्यक्ति को वश
में किया जा सकता है, लेकिन दो को काबू
करना कठिन है। तीन तागों से बटी हुयी डोरी
जल्दी नहीं टूटती है। 13 एक गरीब बुद्धिमान
नवजवान एक ऐसे बूढ़े मूर्ख राजा से बेहतर
है, जो सलाह मानने को तैयार नहीं होता है।
14 चाहे वह उसके राज्य में बिना दौलत के
पैदा हुआ हो या जेल से निकल कर राजा
बन गया हो। 15 मैंने देखा कि लोग दूसरे
नवजवान के संग हो लिए हैं जो उनकी जगह
लेने के लिए खड़ा हुआ 16 जिन पर वह प्रधान
हुआ, वे सभी अनगिनित थे, तौभी भविष्य में
होने वाले लोग उसके कारण आनन्दित होंगे।
इसमें कोई दो राय नहीं कि यह भी बेकार
और मन का कुढ़ना है।

5 जब तुम प्रभु के घर में दाखिल हो, तो
मूर्खों को कुर्बानियों[b] के बजाए सुनने के
लिए जाना, क्योंकि मूर्खों को यह भी नहीं
समझता कि वे बुरा कर रहे हैं। 2 बोलने
में उतावली न करना और न अपने मन
से कोई बात उतावली में प्रभु के सामने
निकालना, क्योंकि प्रभु स्वर्ग में हैं और तुम
पृथ्वी पर। इसलिए तुम कम बात ही करना।
3 जिस तरह से काम ज़्यादा होने के कारण
स्वप्न दिखता है, वैसे ही जो बहुत बक-बक
करता है, वह बेवकूफ़ ठहरता है। 4 जब
तुम प्रभु के लिए कुछ करने के लिए प्रभु
को वचन दो, तो उसे पूरा करने में देरी मत
करना, क्योंकि ऐसे व्यक्ति ने प्रभु को कोई
दिलचस्पी नहीं है। जैसी प्रतिज्ञा तुमने की
है, वैसा करो। 5 यह बेहतर है कि शपथ[c]
खायी ही न जाए बजाए इसके कि शपथ खाएँ
और उसे पूरा न करें। 6 कुछ कह कर अपने
आपको अपराध में फँसा मत लेना और न
ही मन्दिर के संदेश वाहक से कहना, कि
गलती हुयी। तुम्हारी कही बात से प्रभु नाखुश
होकर तुम्हारे हाथ के कामों को बर्बाद न
करें। 7 बहुत ज़्यादा सपनों से और बोलने
से खालीपन होता है, लेकिन तुम्हें प्रभु से
डरना चाहिए। 8 यदि तुम किसी राज्य में न्याय
की धज्जियाँ उड़ते और गरीबों का शोषण
देखो, तो आश्चर्य मत करना। क्योंकि एक
अधिकारी के ऊपर दूसरा और दूसरे के ऊपर
और बड़ा अधिकारी होता है। 9 भूमि की
उपज सभी के लिए है यहाँ तक कि राजा

[a] 4.4 पड़ोसी [b] 5.1 बलिदान [c] 5.5 कसम

भी उसी पर निर्भर है। 10 जिसे कीमती धातु
से लगाव है, वह उससे संतुष्ट न होगा, न
ही वह जो अपनी आय से प्राप्त दौलत से।
यह सब भी बेकार है। 11 जब दौलत बढ़ती
है, तो उस का उपभोग करने वाले भी बढ़ते
हैं। इसके उपभोग को इस से क्या फ़ायदा
सिवाय इसके कि वह इस संपत्ति पर अपनी
आँखें लगाए। 12 मेहनत करने वाला चाहे
कम खाए या बहुत, उसकी नींद सुख की
होती है। लेकिन अमीर की दौलत बढ़ने से
उसको नींद नहीं आती है। 13 मैंने इस दुनिया
में बुरी बात देखी है - वह यह कि धन को उस
का मालिक अपने नुकसान के लिए रखता
है। 14 वह धन जो किसी उपक्रम में बर्बाद
हो जाता है और जब वह व्यक्ति पिता बनता
है, तब हाथ में कुछ नहीं रहता है। 15 जैसा
वह माँ के पेट से निकला, वैसा ही वह
वापस लौट जाएगा। अपनी सारी मेहनत से
बनाया हुआ वह अपने साथ न ले जा सकेगा।
16 यह भी एक दुखदायी बुराई है, कि वह
जैसा आया है, वैसा ही लौट जाएगा। उसे
उस बेकार मेहनत और क्या लाभ? 17 केवल
यह कि जीवन भर उसने बेचैनी से खाना
खाया, दुखित रहा, बीमार रहा और गुस्सा
करता रहा 18 सुनो, मैंने क्या देखा है कि एक
व्यक्ति के लिए यह उचित है कि संसार में
इन्सान खाना खाए और अपने परिश्रम को
फल भोगे, जो प्रभु उसे देता है, क्योंकि यही
उस का भाग है। 19 हर एक मनुष्य जिसे प्रभु
ने धन-दौलत दी हो, उससे मज़ा करने और
उसमें से अपना हिस्सा लेने और मेहनत करते
हुए आनन्द करने की ताकत भी दी हो, यह
प्रभु का वरदान है। 20 अपने जीवन के दिन
उसे बहुत याद न रहेंगे, क्योंकि प्रभु उसकी
सुन-सुन कर उसके मन को खुश रखते हैं।

6 इस दुनिया में लोगों के बीच मैंने एक
बुराई देखी है। 2 किसी व्यक्ति को प्रभु
धन-दौलत और इज़्ज़त इतनी देते हैं कि जो
कुछ वह चाहे, सब कुछ को मज़ा ले सकता
है। लेकिन प्रभु उसे उपभोग का सुख लेने
से वंचित रखते हैं। कोई दूसरा व्यक्ति ही
उसकी धन दौलत का फ़ायदा उठाता है।
यह बेकार बात है और बहुत पीड़ादायक
भी। 3 यदि एक आदमी सौ बच्चों का पिता
हो जाए और उसकी उम्र भी काफी हो जाए,
लेकिन न ही वह खुश रहे और न ही उसकी
अन्तिम क्रिया की जाए, तो ऐसे मनुष्य से तो
वह बच्चा बढ़ कर है जो अधूरे समय पूरा होने
से पहले जन्म लेता है। 4 क्योंकि वह बेकार
ही आया और अन्धेरे में गायब हो गया। उस
का नाम भी अन्धेरे में छिप गया। 5 न उसने
सूरज देखा, न कुछ जान सका फिर भी इस
दूसरे वाले को पहले वाले से अधिक सुकून
रहा। 6 हाँ चाहे वह दो हज़ार साल ज़िन्दा
रहे, लेकिन कुछ भलाई न देखी। क्या सभी
एक जगह[a] नहीं जाते हैं? 7 इन्सान की सारी
मेहनत उसके पेट के लिए होती है, फिर भी
उस का मन सन्तुष्ट नहीं होता है। 8 बुद्धिमान,
मूर्ख से किस बात में बढ़ कर है? 9 आँखों
से देख लेना मन की चंचलता से बढ़ कर
है। यह भी बेकार और जी का कुढ़ते रहना
है। 10 जो कुछ हो चुका है उस का नाम युग
के शुरू से रखा गया है जो उससे अधिक
शक्तिशाली है, उस का मुकाबला कौन कर
सकता है। 11 ऐसी बहुत सी बातें है, जिन के

[a] 6.6 कब्र में

कारण जीवन और ज़्यादा बेकार होता है तो
फिर इन्सान को फ़ायदा क्या? 12 इन्सान के
पल भर के बेकार जीवन में जो छाया की
तरह है, कौन जानता है कि उसके लिए भला
क्या है। उसे कौन बता सकता है कि उसके
बाद संसार में क्या होगा।

7 अच्छा नाम कीमती इत्र से और मौत
का दिन जन्म दिन से उत्तम होता है।
2 दावत के घर जाने से बेहतर शोक के घर
जाना ज़्यादा अच्छा है, क्योंकि सब लोगों
का अन्त यही है। जीवित लोग इस बात पर
मन लगा कर सोचेंगे। 3 खेद, हँसी से उत्तम
है क्योंकि चेहरे के शोक से मन सुधरता है।
4 अक्लमन्दों का मन शोक करने वाले[a] लोगों
की ओर लगा रहता है। मूर्खों का मन आनन्द
करने वालों के घर लगा रहता है। 5 मूर्खों
के गीत सुनने से बुद्धिमान की घुड़की सुनना
बेहतर है। 6 मूर्ख का हँसना डेगची के नीचे
जलते काँटों की चरचराहट की तरह होती है।
यह भी बेकार है। 7 अंधेर से सचमुच बुद्धिमान
बावला हो जाता है और रिश्वत से बुद्धि बर्बाद
हो जाती है। 8 किसी भी काम की शुरूवात
से उस का अन्त उत्तम है। धीरज रखने वाला
व्यक्ति अहंकारी से उत्तम है। 9 गुस्सा करने
में जल्दी मत करो, क्योंकि मूर्खों के भीतर
गुस्सा पनपता रहता है। 10 यह कहना कि
बीते दिन इन दिनों से अच्छे थे, बुद्धिमानी
नहीं है। 11 विरासत[b] के साथ बुद्धि भी ज़रूरी
है और जीवित रहते हैं उनके बड़े काम की
होती है। 12 बुद्धि की आड़ दौलत की आड़
का काम देता है, लेकिन ज्ञान का महत्व यह
है कि बुद्धि से उसके रखने वालों के प्राण
की रक्षा होती है। 13 प्रभु के किए हुए पर
दृष्टि करो, जिस वस्तु का उन्होंने टेढ़ा बनाया
हो[c] उसे कौन सीधा कर पाएगा? 14 अपने
सुख[d] के समय संतुष्ट रहो, लेकिन दुख[e] के
समय सोच विचार करो। दोनों ही को प्रभु ने
बनाया है। तब लोग अपने बाद होने वाली
किसी बात को न समझ सकेंगे। 15 अपने
बेकार जीवन में मैंने यह सभी देखा है, कोई
धर्मी[f] अपने अच्छे काम करते हुए बर्बाद हो
जाता है। दुष्ट[g] बुराई करते हुए लम्बी उम्र
पाता है। 16 अपनी दृष्टि में अधिक धर्मी न
बनो, न ही अपने को बुद्धिमान समझो। ऐसा
करने से तुम अपने आपको बर्बाद क्यों करो?
17 न ही बहुत बुरे व्यक्ति बनो, न मूर्ख। समय
से पहले तुम क्यों मर जाओ। 18,19 बुद्धि ही
से नगर के दस गर्वनरों की अपेक्षा बुद्धिमान
को ज़्यादा शक्ति प्राप्त होती है। 20 बेशक इस
दुनिया में ऐसा धर्मी मनुष्य कोई नहीं, जो
भलाई ही करे और जिस से कोई अपराध
नहीं हुआ हो। 21 सभी सुनी हुयी बातों पर
विश्वास मत कर लेना, कहीं ऐसा न हो कि तुम
अपने दास[h] को शाप देते हुए सुन लो। 22 तुम
स्वयं जानते हो कि तुमने बहुत बार दूसरों
को शाप दिया है। 23 यह सब मैंने बुद्धि से
परखा हैं, मैंने कहा, “मैं बुद्धिमान हो जाऊँगा”
लेकिन ऐसा हुआ नहीं। 24 जो कुछ दूर है और
बहुत गहरा है उस तक कौन पहुँच सकता
है? 25 बुद्धि के बारे में जानने, खोज करने
और भेद जानने के लिए मैंने मन लगाया।
इसलिए भी कि मूर्खता की दुष्टता, मूर्खता
और पागलपन को जानूँ। 26 जिस औरत का
मन फन्दा और जाल है, वह मृत्यु से भी
ज़्यादा दुखदायी है। उसके हाथ जंजीर की
तरह हैं। जो व्यक्ति प्रभु को खुश करता है,
वह उससे बच सकेगा, लेकिन अपराधी उस

[a] **7.4** दुखी [b] **7.11** मीरास [c] **7.13** किया हो [d] **7.14** समृद्धि, बहुतायत [e] **7.14** कमी [f] **7.15** भला व्यक्ति [g] **7.15** बुरा करने वाला [h] **7.21** नौकर

का शिकार बन जाएगा। 27 शिक्षक कहता है,
देखो मैंने यह जान लिया है 28 जिसे मेरा मन
अब तक ढूँढ रहा है, लेकिन पाया नहीं। मैंने
हज़ार में से एक पुरुष को तो पाया, लेकिन
उनमें से एक महिला भी न मिली 29 देखो मैंने
केवल यह बात पायी है, कि प्रभु ने मनुष्य को
ठीक-ठाक बनाया है, लेकिन उन्होंने बहुत
सी गलत और बेकार

8 बुद्धिमान की तरह कौन है? किसी बात
का मतलब कौन लगा सकता है? मनुष्य
की बुद्धि के कारण उस का चेहरा चमकता है
और उसकी कठोरता जाती रहती है। 2 तुम्हें
मैं सलाह देता हूँ कि प्रभु के सामने ली गयी
प्रतिज्ञा के कारण राजा की आज्ञा को मानो।
3 राजा के सामने से जाने के लिए जल्दी मत
करना। बुरी बात पर ज़िद न करना, क्योंकि
राजा को जो बात अच्छी लगती है, वह
करता है। 4 राजा के शब्दों में ताकत होती
है। राजा से उसके किए हुए पर कौन प्रश्न
कर सकता है? 5 जो आज्ञा को मानता है,
वह जोखिम से बचता है। बुद्धिमान का मन
उचित समय और तरीके को समझता है।
6 क्योंकि हर एक बात के लिए एक समय
और तरीका होता है, हालांकि मनुष्य का दुख
उसके लिए बहुत भारी होता है। 7 वह नहीं
जानता कि क्या कब होगा 8 ऐसा कोई व्यक्ति
नहीं, जिसे अपनी आत्मा पर अधिकार हो
और वह उसे निकलने न दे। न ही कोई मौत
के दिन को अपने वश में कर सकता है। 9 इस
जगत में किए जाने वाले सभी कामों को मैंने
बहुत बारीकी से देखा है। मैंने यह भी देखा
है कि दूसरे व्यक्ति पर अधिकार रखने वाला
व्यक्ति अपना ही नुकसान करता है। 10 फिर
मैंने दुष्टों को कब्र में गाड़े जाते हुए देखा
अर्थात उनकी कब्र तो बनायी गयी, लेकिन
जिन्होंने ठीक काम किया था, वे पवित्रस्थान
से निकल गए और उनकी याद तक मिटा दी
गयी, यह भी व्यर्थ है। 11 इसलिए कि बुरे
काम का दण्ड जल्दी नहीं दिया जाता है,
इसलिए बुरे काम करने के लिए लोगों का
मन भरा रहता हैं। 12 अपराधी चाहे सौ बार
अपराध करे और लम्बी उम्र प्राप्त करे तौभी
मुझे निश्चिय है कि प्रभु से डर कर जीने वाले
और प्रभु को अपने सामने जान कर डर से
चलन वालों का भला ही होगा। 13 दुष्ट का
भला नहीं होगा। उसकी जीवन रूपी छाया
लम्बी न हो पाएगी, क्योंकि वह प्रभु के डर
में जीवन नहीं बिताता। 14 इस पृथ्वी पर एक
खराब बात होती देखी गयी है, ऐसे धर्मी हैं
जिन की दशा ऐसी होती है, जैसी दुष्टों की
होनी चाहिए। दूसरी तरफ़ ऐसे दुष्ट हैं, जिन
की हालत वह होती है, जैसी धर्मियों की
होनी चाहिए। मैंने कहा कि यह भी बेकार है।
15 तब मैंने मज़ा करने[a] को सराहा, क्योंकि
इस संसार में भोजन करने और संतुष्ट रहने
के अलावा और कुछ अच्छा नहीं। केवल
उसके जीवन भर जो प्रभु उसके लिए इस
पृथ्वी पर ठहराते हैं, उसकी मेहनत में उसके
संग बना रहेगा। 16 जब मैंने बुद्धि हासिल
करने और पृथ्वी पर किए जाने वाले सभी
कामों को देखने के लिए मन लगाया कि कैसे
इन्सान रात-दिन जागता है। 17 तब मैंने सूरज
के नीचे किए जाने वाले हर एक काम पर
गौर किया और पाया कि वह उसकी गहराई
तक नहीं पहुँच सकता। चाहे इन्सान गहराई
तक पहुँचने के लिए कितना भी परिश्रम क्यों
न कर ले तौभी वह सफल न होगा। हालांकि
वह कहे भी कि मैं उसे समझूँगा, तौभी वह
उसे न पा सकेगा।

[a] **8.15** खुश रहने, आनन्द करने

9 इन सब बातों पर मन लगा कर मैंने
सोचा कि इन सब बातों का रहस्य[a] जानूँ
किस किस तरह धर्मी और बुद्धिमान लोग
और उनके कार्य प्रभु के हाथ में हैं। मनुष्य
के सामने सब तरह की बातें है, लेकिन वह
यह नहीं जान पाता कि, जो कुछ उसके लिए
भविष्य में है, प्रेम है या नफ़रत। 2 सभी के
लिए सब बातें एक तरह की होती हैं। चाहें
व्यक्ति धर्मी है या अधर्मी, शुद्ध है या अशुद्ध।
चाहे वह भेंट चढ़ाने वाला हो या भेंट न
चढ़ाता हो। चाहे वह भला करने वाला हो
या बुरा, शपथ खाने वाला हो या न खाने
वाला हो। 3 जो कुछ इस जगत में किया जाता
है, उसमें बुराई यह है कि सभी की हालत
एक सी होती है। साथ ही मनुष्य का मन,
बुराई से भरा पड़ा है। जब तक वे जीवित
हैं, उनके भीतर बावलापन रहता है। अन्त
में वे मरे हुओं में मिल जाते हैं। 4 लेकिन जो
जीवितों में है, उसे आशा है, क्योंकि एक
ज़िन्दा कुत्ता मरे हुए शेर से बढ़ कर[b] है।
5 क्योंकि जीवित कम से कम इतना जानते
हैं कि वे मरेंगे, लेकिन मरे हुओं को कुछ भी
नहीं मिल सकता। उन्हें कोई याद भी नहीं
करता है। 6 उनका प्रेम, दुश्मनी[c] और जलन
सभी बर्बाद हो चुकी है। इस दुनिया में जो
कुछ किया जाता है उसमें उन लोगों का कभी
भी कोई हिस्सा नहीं होगा। 7 अपने रास्ते पर
चलते चलो, खुशी से अपना खाना खाओ,
अपना दाखमधु आनन्द से पीओ, क्योंकि
प्रभु तुम्हारे कामों को स्वीकार कर चुके है।
8 तुम्हारे कपड़े उजले रहें और सिर पर तेल
हों। 9 अपने खाली जीवन के वे सभी दिन
जो इस पृथ्वी पर है, अपने प्रिय पत्नी के
साथ बिताना। तुम्हारा जीवन और तुम्हारी
मेहनत जो इस संसार में है, यही तुम्हारा
हिस्सा है। 10 जो काम तुम्हें मिले, उसे तुम
अपनी सारी ताकत से करना, क्योंकि कब्र
जहाँ तुम जाने वाले हो, न ही कोई काम,
युक्ति, ज्ञान या बुद्धि है। 11 फिर मैंने देखा
कि न दौड़ में तेज दौड़ने वाले, न सेना में
शूरवीर जीतते हैं। न बुद्धिमान लोग रोटी पाते
हैं, न समझ वाले दौलत, न ही 12 मनुष्य को
अपने समय का ज्ञान नहीं है, जिस तरह से
मछलियाँ खतरनाक जाल में फँसती हैं और
चिड़ियाँ फंदे में, उसी तरह लोग भी अचानक
आ जाने वाले दुख में फँस जाते हैं। 13 मैंने
दुनिया में एक बुद्धि की बात देखी है जो
कि बहुत बड़ी मालूम होती है। 14 एक छोटा
सा कस्बा था, जिस में कुछ लोग ही रहा
करते थे। एक महान राजा ने आकर इसे घेर
लिया और चारों तरफ़ घेराबन्दी की। 15 इसी
कस्बे में एक गरीब बुद्धिमान व्यक्ति रहा
करता था। अपनी बुद्धि से उसने इस कस्बे
को बचा लिया, फिर भी किसी ने इस गरीब
आदमी को याद न रखा। 16 तब मैंने कहा,
“हालांकि गरीब की बुद्धि को लोग यों ही
समझते हैं और उसकी कोई सुनता नहीं है
तौभी ताकत से अधिक बढ़ कर बुद्धि है।”
17 बुद्धिमान लोगों के धीमे शब्दों को मूर्खों के
बीच शासन करने वाले के चिल्ला-चिल्लाकर
कहे जाने वाले शब्दों से अधिक सुना जाता
है। 18 बुद्धि का महत्व लड़ाई के हथियारों
से ज़्यादा है, लेकिन एक अपराधी ढेर सारी
भलाई को नाश कर डालता है।

10 मरी हुयी मक्खियों के कारण
खुशबूदार तेल[d] बदबू देने लगता है।
इसी तरह छोटी सी मूर्खता बुद्धिमता और
सम्मान दोनों ही की बदनामी कर डालती
है। 2 बुद्धिमान का मन उचित बात की ओर

[a] 9.1 भेद [b] 9.4 बेहतर [c] 9.6 नफ़रत [d] 1.1 द्रव्य

रहता है, लेकिन बेवकूफ़ का अनुचित बात
की ओर। 3 रास्ते पर चलते हुए मूर्ख की
समझ काम नहीं देती और वह सभी से कहता
है, मैं मूर्ख हूँ। 4 गर्वनर[a] को गुस्सा आने पर
अपनी जगह मत छोड़ना, क्योंकि अधीनता
स्वीकार करने से बड़े-बड़े अपराधी भी रूक
जाते हैं। 5 इस पृथ्वी पर मैंने एक बुराई देखी
है, वह यह कि शासन करने वाला गलती
कर डालता है। 6 दूसरे शब्दों में मूर्ख लोग
ऊँचे ओहदे पर रखे जाते है और अमीर लोग
नीचे बैठते हैं। 7 मैंने नौकरों को घुड़सवारी
करते और राजकुमारों को नौकरों की तरह
सड़क पर चलते देखा है 8 जो व्यक्ति गड्ढा
खोदता है, उसमें गिरता है और जो बाड़े
को तोड़ डालता है उसे साँप काटेगा। 9 जो
पत्थर फोड़े, वह उन से घायल होगा और जो
लकड़ी काटेगा, उसी से उसको डर होगा।
10 यदि कुल्हाड़ी पैनी न हो तो अधिक ताकत
लगानी होगी, लेकिन सफ़लता पाने के लिए
बुद्धि से फ़ायदा है। 11 यदि मंत्र कहने से पहले
किसी को साँप डसे तो मंत्र कहने वाला
कोई सफ़लता नहीं पाएगा। 12 बुद्धिमान की
बातें कोमलता से भरी होती है, लेकिन मूर्ख
अपनी बातों से बर्बाद होता है। 13 उसकी
बात की शुरुआत बेवकूफी से और उनका
अन्त दुखदाई बावलापन होता है। 14 मूर्ख
बहुत सी बातें बढ़ाचढ़ाकर बोलता है, फिर
भी कोई इन्सान नहीं जानता कि क्या होगा,
और कौन बता सकता है कि उसके बाद
क्या होगा। 15 बेवकूफ इन्सान को मेहनत से
तकलीफ होती है, यह तक कि उसे मालूम
नहीं होता कि कि नगर को कैसे जाए 16 हे
देश, तुम पर हाय, जब तुम्हारा राजा लड़का
है और तुम्हारे गवर्नर सुबह -सवेरे भोज करते
हैं। 17 हे देश तुम आशीषित हो जब तुम्हारा
राजा अमीर है, और तुम्हारे गवर्नर समय
पर खाना खाते हैं, ऐसा वे मतवाला होने
के लिए नहीं करते लेकिन अपनी ताकत
बढ़ाने के लिए। 18 आलस्य के कारण छत
की कड़ियाँ दब जाती हैं औरहाथों ई सुस्ती
से घर चूता है। 19 भोज हँसी खुशी के लिए
करते हैं, दाखमधु से आनन्द मिलता है। पैसे
से सब कुछ हासिल कर सकते हैं। 20 राजा
को अपने मन में भी शाप न देना, न अमीर
आदमी को अपने सोने के कमरे से, क्योंकि
कोई आकाश की चिड़िया तुम्हारे शब्दों को
ले जाएगी, और जिसके पंख हैं वह बता देगा।

11 पानी को सतह पर अपनी रोटी को
फेंक दो, क्योंकि बहुत दिन के बाद
तुम उसे फिर से पा लोगे। 2 सात क्या आठ
लोगों को भी हिस्सा दो, क्योंकि तुम्हें मालूम
नहीं कि इस दुनिया पर क्या मुसीबत आने
वाली है। 3 पानी से भरे बादल ही बरसात देते
हैं। उत्तर हो या दक्षिण, जहाँ पर पेड़ गिरता
है, वहीं पड़ा रहता है। 4 जो हवा पर अपनी
नज़र रखेगा, वह बीज नहीं बो सकेगा। जो
बादलों की ओर अपनी दृष्टि बादलों की
ओर लगाएगा, वह फ़सल न काटने पाएगा।
5 जिस तरह से तुम हवा के चलने की दिशा
नहीं जानते और यह भी कि गर्भवती महिला
के पेट में शिशु कैसे बढ़ता है, वैसे ही तुम प्रभु
के काम को नहीं जानते जो सब कुछ करते
हैं। 6 सुबह के समय अपना बीज बो दो और
शाम को भी अपना हाथ मत रोकना, क्योंकि
तुम नहीं जानते कि सफल कौन-सा होगा -
या वह या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगें।
7 प्रकाश से मन को सुख मिलता है और धूप
देखने से आँखें तृप्त होती हैं। 8 जिस की उम्र
लम्बी है, उसे खुश होना चाहिए। उसे यह नहीं
भूलना चाहिए कि अन्धेरे के दिन भी बहुत

[a] **10.4** अधिकारी

होंगे। जो कुछ भी हो रहा है, बेकार है। 9 हे
जवान, अपनी जवानी में खुश रहो, मगन रहो,
मनमानी करो जैसे तुम्हारी आँखें चाहें, उसके
अनुसार जिओ। लेकिन यह भूल मत जाना
कि इन सभी विषयों में प्रभु तुम्हारा न्याय
करेंगे। 10 अपने मन में से शोक और अपनी
देह से दुख को दूर करो, क्योंकि लड़कपन
और जवानी, दोनों ही बेकार हैं।

12 अपनी जवानी के दिनों में अपने
बनाने वाले को याद रखो, इस से
पहले कि मुसीबत के दिन और वह समय
आए, जिन में तुम कहो कि इनमें मेरा मन नहीं
लगता। 2 इस से पहले कि सूरज, प्रकाश,
चन्द्रमा और तारे अँधेरा हो जाए और वर्षा
होने के बाद बादल फिर घिर आएँ। 3 उस
समय घर के पहरेदार काँपेंगे, ताकतवर झुक
जाएँगे, पिसन-हारियाँ थोड़ी रहने के कारण
काम रोक देंगी और झरोखों में से देखने
वालियाँ अंधी हो जाएँगी। 4 सड़क की ओर
दरवाज़े बंद होंगे और चक्की पीसने का शब्द
धीमा होगा। बहुत सवेरे चिड़िया बोलते ही
एक उठ जाएगा। सभी गाने वालियों की
आवाज धीमी हो जाएगी। 5 जब वे ऊँचे
स्थानों से डरे हों और रास्ते का डर उन्हें
सताए, जब बादाम का पेड़ फले, टिड्डी सिर
दर्द बन जाए, इच्छा पूरी न हो, क्योंकि
इन्सान अपने सदा काल के घर जाएगा और
विलाप करने वाले मारे-मारे फिरेंगे। 6 इसके
पहले कि चाँदी की डोरी टूट जाए, सोने
का कटोरा टूट जाए, सोते के पास मटका
फूट जाए या तालाब के पास रहट टूट जाए,
उसे[a] को याद रखना। 7 तब मिट्टी वापस
मिट्टी में मिल जाएगी, प्रभु जिस ने आत्मा
दी है, उन्हीं के पास वापस चली जाएगी।
8 शिक्षक कहता है सब बेकार ही बेकार
सब कुछ बेकार है। 9 शिक्षक बुद्धिमान होने
की वजह से अपनी प्रजा का ज्ञान[b] देता
रहा। वह बड़ी सावधानी से जाँच-पड़ताल
करके नीतिवचन को क्रम से रखता रहा।
10 शिक्षक ने मनभावने शब्दों की खोज की
और ईमानदारी से सच्ची बातें लिख दी।
11 बुद्धिमानों की बातें तीर की तरह होती हैं।
सभा के प्रधानों[c] के वचन गाड़ दी गयी कीलों
की तरह हैं, क्योंकि एक ही चरवाहे से वे
मिलते हैं। 12 हे मेरे बेटे, इन्हीं से सावधानी
बरतें। पुस्तकों के लिये जाने का कोई अन्त
नहीं है और अधिक पढ़ाई करने से देह थक
जाती है। 13 सभी बातों का सारांश सुनो,
प्रभु से डरो और उनकी आज्ञाओं को मानो
क्योंकि यही मनुष्य की जिमेंदारी है। 14 प्रभु
सब कामों और छिपी बातों का, चाहे वे भली
हों या बुरी न्याय करेंगे।

---

[a] **1.6** प्रभु [b] **12.9** नसीहत [c] **12.11** अगुवो

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com